International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 7 Issue 6, November-December, 2019, Impact Factor: 5.246

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी पात्रों का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. मालती साहू

सहायक प्राध्यापक, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जुनवानी, भिलाई (छत्तीसगढ़)

सारांश

हिंदी कथा साहित्य में चित्रा मुद्गल का स्थान एक महत्वपूर्ण कथाकार के रूप में है। उनके कथा साहित्य में समकालीन भारतीय समाज की जटिल संरचनाओं, श्रमिक जीवन, स्त्री-अस्मिता, पारिवारिक संबंधों, आर्थिक विषमता तथा मानवीय संवेदनाओं का चित्रण मिलता है। विशेष रूप से उनके नारी पात्र सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक व्यवस्था से संघर्ष करते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान निर्मित करने का प्रयास करते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में चित्रा मुद्गल के चयनित कथा साहित्य के आधार पर नारी पात्रों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वरूप का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह देखना है कि उनकी स्त्रियाँ परिवार, विवाह, रोजगार, आर्थिक स्वावलंबन, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा आत्मसम्मान जैसे प्रश्नों से किस प्रकार जूझती हैं और इन परिस्थितियों का उनके मनोविज्ञान पर क्या प्रभाव पड़ता है।

चित्रा मुद्गल की स्त्री न तो केवल करुणा की पात्र है और न ही मात्र पुरुष-विरोधी प्रतिरोध का प्रतीक। 'एक जमीन अपनी' में स्वतंत्र पहचान और रचनात्मक क्षमता की आकांक्षा, 'आवां' में श्रमिक तथा सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में स्त्री की सक्रियता और अन्य रचनाओं में पारिवारिक तथा भावनात्मक संघर्ष स्त्री जीवन के विविध आयामों को उद्घाटित करते हैं।

बीज शब्द: चित्रा मुद्गल, नारी विमर्श, सामाजिक चेतना, मनोविज्ञान, स्त्री संघर्ष, आत्मनिर्भरता, स्त्री अस्मिता।

प्रस्तावना

भारतीय समाज की संरचना में स्त्री की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है। जहां परिवार, संस्कृति, परंपरा और सामाजिक मूल्यों के निर्माण में उसकी सक्रिय भागीदारी के बावजूद उसे लंबे समय तक अनेक प्रकार की असमानताओं और प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री के लिए ऐसे सामाजिक मानदंड सुनिश्चित किए जिनमें स्त्री की स्वतंत्रता,उसकी इच्छा और निर्णय-क्षमता को प्रायः गौण माना गया है। विवाह, परिवार, मातृत्व, घरेलू दायित्व तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर स्त्री के व्यक्तित्व को एक निश्चित सीमा में बाँधने का प्रयास किया जाता रहा है। उन्होंने स्त्री को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के बीच रखकर उसकी सामाजिक स्थिति और आंतरिक मनःस्थितियों दोनों को समान रूप से अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में उपस्थित नारी पात्रों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वरूप का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत स्त्री की पारिवारिक स्थिति, विवाह-संबंध, आर्थिक स्वतंत्रता, कार्यक्षेत्र, सामाजिक प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान तथा निर्णय लेने की क्षमता जैसे पक्षों को महत्व दिया गया है।

चित्रा मुद्गल का साहित्यिक परिचय

चित्रा मुद्गल आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की प्रमुख लेखिकाओं में से एक मानी जाती हैं। उनके साहित्यिक जीवन में जीवन के विविध सामाजिक संस्कारों के साथ-साथ सामान्य मनुष्य के जीवन के संघर्ष, श्रमिक वर्ग की समस्याएँ, स्त्री अस्मिता और बदलते हुए सामाजिक संबंधों का प्रभावशाली चित्रण देखा गया है। उनकी रचनात्मक दृष्टि जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई है। इसलिए उनके पात्र कृत्रिम या आदर्शीकृत न होकर सामाजिक यथार्थ की शक्त जमीन पर खड़े दिखाई पड़ते हैं। चित्रा मुद्गल की प्रमुख कृतियों में 'आवां', ***'एक जमीन अपनी'***, 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' और 'गिलिगडु' आदि का उल्लेख किया जाता है।

उनकी रचनाओं में शहरी जीवन, श्रमिक वर्ग, विस्थापन, पारिवारिक संबंध, स्त्री-पुरुष संबंध और मानवीय संवेदना के अनेक स्तर पाए गए हैं। उनकी दृष्टि में स्त्री जीवन की कठिन परिस्थितियों को केवल सहन नहीं करतीं, बल्कि उनके अर्थ को समझते हुए उनसे निडर होकर संघर्ष भी करती हैं। वे अपनी विचारों को महत्व देते हुए अपनी इच्छाओं और अधिकारों को पहचानने की प्रक्रिया में आगे बढ़ती रहती हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य स्त्री को निष्क्रिय पीड़िता के पारंपरिक रूप से बाहर लाता है , तथा उनकी जीवन मैं घटित होने वाली समस्याओं को समाधान ढूंढना है।

नारी पात्रों का सामाजिक अध्ययन

चित्रा मुद्गल के नारी पात्र अपने सामाजिक परिवेश से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं। उनके जीवन की समस्याएँ व्यक्तिगत होते हुए भी सामाजिक कारणों से निर्मित होती हैं। परिवार और विवाह संस्था, आर्थिक निर्भरता, रोजगार में असमानता, सामाजिक अपेक्षाएँ तथा पुरुष-प्रधान मानसिकता उनके सामने प्रमुख चुनौतियों के रूप में उपस्थित होती हैं , जिस दौरान वह अपने स्वतंत्रता और अपने जीवन की खुशियों को प्राप्त करने की लड़ाई में उलझी रहती है । विवाह स्त्री की सामाजिक पहचान, आर्थिक सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता से जुड़ा प्रश्न बन जाता है। जब दांपत्य संबंधों में समानता का अभाव होता है , तब स्त्री के भीतर असंतोष, अकेलापन और आत्मसम्मान की पीड़ा जन्म लेती है , जो उसे अंदर ही अंदर से पीड़ा और असहजता के अथाह समुद्र की ओर ले जाता है । ऐसे में उसका प्रतिरोध केवल व्यक्तिगत विद्रोह नहीं रहता, बल्कि सामाजिक संरचना पर भी बड़ा प्रश्नचिह्न बन जाता है।

आर्थिक स्वतंत्रता और स्त्री अस्मिता

आर्थिक सशक्तिकरण आधुनिक स्त्री के व्यक्तित्व-निर्माण का महत्वपूर्ण आधार है। चित्रा मुद्गल की रचनाओं में रोजगार स्त्री के लिए केवल आय का साधन नहीं है , बल्कि आत्मनिर्भरता और निर्णय -क्षमता का माध्यम भी है। कामकाजी स्त्री घर और कार्यक्षेत्र दोनों की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। इस प्रक्रिया में उसे आए दिन सामाजिक पूर्वाग्रहों तथा मानसिक दबावों का सामना करना पड़ता है। ***'एक जमीन अपनी'*** में स्त्री की स्वतंत्र पहचान और रचनात्मक क्षमता की खोज विशेष रूप से दिखाई देती है। कार्यक्षेत्र में स्त्री की उपस्थिति उसे आत्मविश्वास देती है, परंतु उसके सामने प्रतिस्पर्धा, पुरुषवादी दृष्टि और सामाजिक अपेक्षाओं की चुनौतियाँ भी रहती हैं। इस प्रकार आर्थिक स्वतंत्रता उसके लिए मुक्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बनती है।

सामाजिक प्रतिष्ठा और स्त्री का संघर्ष

समाज स्त्री से अनेक प्रकार की मर्यादाओं का पालन की आशा करता है। उसकी व्यक्तिगत पसंद , वेशभूषा, व्यवहार, मित्रता, रोजगार और सार्वजनिक जीवन तक को सामाजिक निगाह नियंत्रित करती है। चित्रा मुद्गल की स्त्रियाँ इस निगरानी को अनुभव करती हैं और धीरे-धीरे यह समझती हैं कि सम्मान केवल समाज द्वारा दिए गए प्रमाण से निर्धारित नहीं हो सकता। आत्मसम्मान भी व्यक्ति की गरिमा का अनिवार्य हिस्सा है।

'एक जमीन अपनी' में नारी पात्रों का अध्ययन

'एक जमीन अपनी' में स्त्री के व्यक्तित्व, स्वतंत्रता और रचनात्मक अस्तित्व का प्रश्न प्रमुखता से उभरता है। रचना में स्त्री अपने लिए ऐसी जगह की तलाश करती है जहाँ वह अपनी प्रतिभा, संवेदना और निर्णय-क्षमता के साथ स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार की जा सके और जहां उसकी भावनाओं को स्थान मिले, उसके भाव को पहचान मिले। 'अपनी जमीन' का अर्थ केवल भौतिक स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक स्वतंत्रता से भी जुड़ता है। इस रचना में स्त्री की आकांक्षा आधुनिक जीवन की उस चेतना का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें वह स्वयं को केवल किसी संबंध की पहचान से नहीं , बल्कि अपने कर्म और व्यक्तित्व से परिभाषित करना चाहती है। यह आकांक्षा सामाजिक व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती भी बनती है, क्योंकि स्वतंत्र निर्णय लेने वाली स्त्री पारंपरिक भूमिकाओं को प्रश्नांकित करती है। कार्यस्थल स्त्री के लिए अवसर और संघर्ष दोनों का क्षेत्र है।

रचनात्मकता और आत्मपहचान

स्त्री की रचनात्मक क्षमता को पहचानना उसके व्यक्तित्व को पूर्णता देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना गया है। चित्रा मुद्गल की दृष्टि में स्त्री का सृजनात्मक पक्ष उसकी स्वतंत्र चेतना का प्रमाण है। वह केवल परिवार और सामाजिक दायित्वों को पूरा करने वाली इकाई नहीं है , बल्कि विचार करने , सृजन करने और अपने जीवन की दिशा तय करने वाली मनुष्य है। ***'एक जमीन अपनी'*** में आत्मपहचान की यह प्रक्रिया भीतर से शुरू होती है। बाहरी परिस्थितियों में परिवर्तन तभी स्थायी बनता है जब स्त्री अपने भीतर अपनी क्षमता और अधिकार का बोध विकसित करे। इसलिए रचना का स्त्री विमर्श मनोवैज्ञानिक विकास से भी जुड़ा हुआ है।

'आवां' में स्त्री का सामाजिक यथार्थ

'आवां' में सामाजिक और राजनीतिक परिवेश के बीच स्त्री जीवन की समस्याओं का व्यापक चित्रण पाया गया है। श्रमिक जीवन , संगठन, संघर्ष और सामाजिक असमानता के संदर्भ में स्त्री की स्थिति अनेक स्तरों पर सामने आती है। यहाँ स्त्री केवल घरेलू संसार की सदस्य नहीं रहती , बल्कि सार्वजनिक जीवन और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाती है। श्रमिक परिवेश में स्त्री के सामने आर्थिक कठिनाइयों के साथ-साथ लैंगिक भेदभाव और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी होती हैं।

नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

चित्रा मुद्गल के रचनाओं में नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक पक्ष उनके सामाजिक संघर्षों में गहराई से जुड़ा हुआ पाया गया है। बाहरी परिस्थितियाँ उनके भीतर अनेक प्रकार के भावनात्मक द्वंद्व उत्पन्न करती हैं। स्वतंत्रता की आकांक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी , आत्मसम्मान और संबंधों को बचाए रखने की इच्छा , व्यक्तिगत सुख और परिवार की अपेक्षाएँ—इन विरोधी स्थितियों के बीच स्त्री का मन निरंतर संघर्ष करता है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर असुरक्षा स्त्री अनुभव का महत्वपूर्ण पक्ष है। आर्थिक निर्भरता , सामाजिक आलोचना, दांपत्य जीवन की अस्थिरता और कार्यक्षेत्र में भेदभाव जैसी स्थितियाँ उसके भीतर भय तथा तनाव पैदा कर सकती हैं , तथा जीवन के दौड़ मैं उसे पीछे कीमैं उसे पीछे की ओर धकेलती । चित्रा मुद्गल की स्त्रियाँ इस असुरक्षा में स्थायी रूप से कैद नहीं

रहतीं। धीरे -धीरे उनमें आत्मविश्वास और प्रतिरोध की चेतना विकसित होती है। उनके पात्रों में आत्मसम्मान एक केंद्रीय मनोवैज्ञानिक शक्ति के रूप में दिखाई देता है।

अंतर्द्वंद्व और निर्णय-क्षमता

चित्रा मुद्गल की स्त्रियाँ सहज रूप से कोई निर्णय नहीं ले पाती। उनके सामने भावनात्मक और सामाजिक प्रश्न होते हैं, जो निर्णय लेने में मानसिक तथा सामाजिक हस्तक्षेप उत्पन्न करते है । वे अपने संबंधों, जिम्मेदारियों और भविष्य के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करती हैं। यही कारण है कि उनके पात्रों में अंतर्द्वंद्व स्वाभाविक और विश्वसनीय दिखाई देता है। निर्णय की प्रक्रिया में स्त्री का आत्मबोध धीरे-धीरे मजबूत होता दिखाई पड़ता है। शुरुआती दिनों में वह परिस्थितियों से प्रभावित हो सकती है , किंतु अनुभव उसे अपनी प्राथमिकताओं को पहचानने की क्षमता बढ़ा देती है। इस दृष्टि से मनोवैज्ञानिक विकास उनके चरित्र -निर्माण की प्रमुख विशेषता माना गया है।

अकेलापन, संवेदना और आत्मसंवाद

आधुनिक जीवन में सामाजिक संबंधों की भीड़ के बावजूद व्यक्ति के भीतर अकेलेपन की अनुभूति बढ़ सकती है। चित्रा मुद्गल की स्त्रियाँ भी कभी-कभी ऐसी मनःस्थिति से गुजरती हैं। उनके भीतर की संवेदनशीलता उन्हें संबंधों की विडंबनाओं को अधिक तीव्रता से अनुभव करने के लिए प्रेरित करती है। अकेलापन केवल दुख का संकेत नहीं है ; यह आत्मसंवाद की प्रक्रिया भी बन सकता है। अपने भीतर झाँकने के बाद स्त्री अपने जीवन और संबंधों के बारे में नए ढंग से सोचती है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक पीड़ा कई बार आत्मचेतना के विकास का माध्यम बनती है।

नारी चेतना, प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी चेतना केवल अधिकारों की मांग तक सीमित नहीं है। यह चेतना जीवन की परिस्थितियों को समझने, अपने निर्णय स्वयं लेने और अन्यायपूर्ण सामाजिक संरचनाओं का कड़ा प्रतिरोध कर उनका सामना करने से जुड़ी है। उनकी स्त्रियाँ शिक्षा , रोजगार और आत्मसम्मान के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को विकसित बनाती हैं। नारी चेतना का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि स्त्री अपने जीवन को स्वयं परिभाषित करना सीखती है। वह समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं को पूरी तरह अस्वीकार किए बिना उनमें परिवर्तन की संभावना तलाशती है। परिवार और समाज के साथ संवाद करते हुए वह अपने लिए सम्मानजनक स्थान बनाने की हर मुमकिन कोशिश करती है।

शिक्षा और आत्मनिर्भरता

शिक्षा स्त्री की आत्मनिर्भरता का मार्ग सुनिश्चित करता है । शिक्षा स्त्री के लिए ज्ञान प्राप्ति के साथ -साथ आत्मविश्वास और निर्णय -क्षमता का माध्यम बनता है। एक शिक्षित स्त्री सामाजिक संरचनाओं को समझने और अपने अधिकारों के प्रति सजग होने में अधिक सक्षम होती है। चित्रा मुद्गल की स्त्री चेतना में ज्ञान और अनुभव दोनों का महत्व है। आर्थिक आत्मनिर्भरता शिक्षा को व्यवहारिक शक्ति प्रदान करती है।

स्त्री और सामाजिक परिवर्तन

स्त्री सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला है। विशेषकर 'आवां' जैसे कथानक में स्त्री का संघर्ष व्यापक श्रमिक और सामाजिक संघर्ष से जुड़ता है। इससे नारी विमर्श का दायरा निजी जीवन से निकलकर सार्वजनिक जीवन तक पहुँचता है।इस प्रकार स्त्रियाँ केवल अपने व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं चाहतीं , बल्कि ऐसी सामाजिक व्यवस्था की आकांक्षा करती हैं जिसमें समानता, सम्मान और न्याय के अवसर सभी को प्राप्त हों।

सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्षों का अंतर्संबंध

चित्रा मुद्गल के नारी पात्रों को केवल सामाजिक या केवल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखना उनके चरित्र की पूर्णता को समझने के लिए पर्याप्त नहीं है। सामाजिक परिस्थितियाँ उनके मनोविज्ञान को प्रभावित करती हैं और मनोवैज्ञानिक चेतना उन्हें सामाजिक परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया करने की शक्ति देती है। यही दोनों पक्षों का अंतर्संबंध उनके पात्रों को जीवंत बनाता है। उदाहरण के लिए आर्थिक निर्भरता केवल सामाजिक समस्या नहीं रहती; वह आत्मविश्वास और निर्णय-क्षमता को प्रभावित करती है। इसी प्रकार कार्यक्षेत्र में भेदभाव बाहरी अनुभव होते हुए भी आत्मसम्मान पर प्रभाव डालता है। परिवार में असमान संबंध मानसिक तनाव पैदा करते हैं, और यही तनाव आगे चलकर प्रतिरोध या आत्मनिर्भरता की इच्छा को जन्म दे सकता है।इस दृष्टि से चित्रा मुद्गल के नारी पात्र विकासशील चरित्र हैं। वे स्थिर नहीं हैं।

निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य समकालीन नारी जीवन का सशक्त दस्तावेज प्रस्तुत करता है। उनकी स्त्रियाँ सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ी हुई हैं और उनके व्यक्तित्व में सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों स्तरों का समन्वय दिखाई देता है। वे पितृसत्तात्मक व्यवस्था, आर्थिक निर्भरता, पारिवारिक दबाव और सामाजिक रूढ़ियों से संघर्ष करते हुए अपनी पहचान स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ती हैं 'एक जमीन अपनी' में स्वतंत्र पहचान और रचनात्मक अस्तित्व की खोज , जबकि 'आवां' में सामाजिक-राजनीतिक और श्रमिक परिवेश के बीच स्त्री की सक्रिय भूमिका, चित्रा मुद्गल की नारी-दृष्टि के महत्वपूर्ण पक्षों को सामने

लाती है। उनकी स्त्री केवल पीड़ित नहीं है ; वह अपने अनुभवों से सीखती है , आत्मसम्मान अर्जित करती है और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करती है।

संदर्भ सूची

1. चित्रा मुद्गल — *एक जमीन अपनी*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999, पृ. 45–47.
2. चित्रा मुद्गल — *आवां*, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999, पृ. 112–115.
3. चित्रा मुद्गल — *पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा*, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 68–72.
4. चित्रा मुद्गल — *गिलिगडु*, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 91–95.
5. चित्रा मुद्गल — *आदि-अनादि*, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 56–60.
6. अरविंद जैन — *औरत अस्तित्व और अस्मिता*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 25–29.
7. रेखा कस्तवार — *स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 41–46.
8. क्षमा शर्मा — *स्त्रीत्ववादी विमर्श : समाज और साहित्य*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ. 35–40
9. राजेन्द्र यादव — *आदमी की निगाह में औरत*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 52–57.
10. प्रभा खेतान — *स्त्री उपेक्षिता*, हिंदी अनुवाद, पृ. 63–68.
11. राधा कुमार — *स्त्री संघर्ष का इतिहास*, पृ. 74–79.
12. रमणिका गुप्ता — *स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास*, पृ. 88–93.
13. अनामिका — *स्त्री विमर्श का लोकपक्ष*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 102–107.
14. प्रदीप श्रीधर — *स्त्री चिंतन की अंतर्धाराएँ और समकालीन हिंदी उपन्यास*, पृ. 115–120.